## Quadrant II – Transcript and Related Materials

**Programme:** Bachelor of Arts (Second Year)

**Subject:** Hindi

**Paper Code: HNC 104**

**Paper Title: DSC:** आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य:परिचयात्मक अध्ययन (18501960)

**Unit:** 01

**Module Name:** प्रेमचंदोत्तर युग (नई कहानी)।

**Module number: 03**

**Name of the Presenter: Ms. Saheli M. Borkar**

---

**Transcript:**

**प्रेमचंदोत्तर हिंदी कहानी :**

सन् 1936 से सन् 1950 ई. तक का समय हिंदी कथा जगत में प्रेमचंदोत्तर कहानी काल के रूप में जाना जाता है। प्रेमचंदोत्तर कहानी किसी एक दिशा की ओर अग्रसर नहीं हुई अपितु विविध दिशाओं में उसका विकास हुआ। कहानी इस काल की केंद्रीय विधा रही है अतः उसने जीवन और जगत के विविध पक्षों को अपनी परिधि में समेटने का प्रयास किया। इस काल में कहानी को पुरानी परंपराओं के साथ नई परंपराओं का उदय और विकास हुआ। इस काल में जहाँ एक ओर प्रगतिवादी कहानियाँ लिखी गई, वहीं दूसरी ओर मनोविश्लेषणपरक कहानियाँ व यथार्थवादी कहानियाँ भी लिखी गई।

प्रगतिवादी कथाकारों में सर्वप्रमुख हैं - यशपाल, जिन्होंने मार्क्सवादी चेतना से अनुप्राणित होकर अनेक कहानियों की रचना की। वर्ग संघर्ष, शोषण, सामाजिक

एवं नैतिक रूढ़ियों पर आक्रोश उनकी कहानियों के विषय रहे हैं। यशपाल की लिखी कहानियों के कई संग्रह प्रकाशित हुआ हैं, जिनमें प्रमुख हैं- 'वो दुनिया', 'पिंजड़े की उड़ान', 'फूलो का कुर्ता', 'तर्क का तूफान' एवं 'चक्कर क्लब'। प्रेमचंद के बाद हिंदी कहानी साहित्य कई धाराओं में बँट गया। द्वंद्वात्मक भौतिकवाद का प्रभाव कहानी लेखन पर पड़ा और अनेक कहानीकार उसके अनुसार कहानियाँ लिखने लगे। इसी तरह मनोविश्लेषण वाद से प्रभावित जैनेन्द्र, इलाचंद्र जोशी और अज्ञेय की कहानियाँ प्रकाश में आई। पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' प्रकृत यथार्थवादी कहानीकार के रूप में जाने गए। इनकी कहानियों का समाज प्रकृत हैं।

प्रेमचंद युग के अंतिम चरण में हिंदी कहानियों का नया रूप सामने आने लगा था। प्रेमचंद की दृष्टि आदर्श की ओर थी। इसलिए उन्होंने समस्याओं का आदर्शवादी समाधान सुझाया। उनके बाद के कथाकारों ने यथार्थवादी दृष्टिकोण को महत्व दिया। इन लेखकों में जैनेन्द्र, इलाचंद्र जोशी, यशपाल, अज्ञेय और 'अश्क' महत्वपूर्ण हैं। जैनेन्द्र ने नारी-पुरुष के मानसिक द्वंद्वों और संबंधों को केंद्र में रखकर कहानियाँ लिखी हैं। 'फाँसी', 'यातायन', 'नीलम देश की राजकन्या', 'एक रात', 'दो चिड़िया', 'पाजेब', 'जयसंधि' आदि जैनेन्द्र के कथा-संग्रह हैं। प्रेमचंद की कहानियों में जहाँ समाज को महत्व दिया गया है, वही जैनेन्द्र की कहानियों में व्यक्ति को। यशपाल ने सामाजिक यथार्थ को मार्क्सवादी दृष्टिकोण से कहानियों में प्रस्तुत किया है।

अज्ञेय ने व्यक्ति के परिवेश और संघर्ष को अपनी कहानियों में उकेरा है। उनकी कहानियों में मनोविश्लेषण के साथ-साथ प्रतिकात्मक एवं बौद्धिकता का प्रभाव भी है। अज्ञेय ने कहानी को बौद्धिक एवं वैचारिक आधार प्रदान किए तथा प्रतिकों एवं बिंबों के प्रयोग में वृद्धि की। अज्ञेय की कुछ प्रसिद्ध कहानियों के नाम हैं- 'खितीन बाबू', 'पुलिस की सीटी', इजामत का साबुन', 'कोठरी की बात', 'गैंग्रीन' 'पठार का धीरज' आदि।

इलाचंद्र जोशी ने अपनी कहानियों में दमित कामवासना, तज्जन्य मानसिक विकृति को अभिव्यक्ति दी है। उन्होंने दमित काम-ग्रंथि के आधार पर व्यक्ति के मानसिक उन्नयन पर बल दिया है। अज्ञेय की कहानियाँ जैनेन्द्र की परंपरा का विकास करती प्रतीत होती हैं। जैनेन्द्र की तरह अज्ञेय ने भी व्यक्ति को केंद्र में रखा है, लेकिन साथ ही सामाजिक संघर्षों से भी कहानियों को संदर्भित किया है। अज्ञेय नई कहानी के विकास तक सक्रिय रहे हैं।

उपेंद्रनाथ 'अश्क' को प्रेमचंद के समय में ही प्रसिद्धि मिल गई थी। उन्होंने निम्न मध्यवर्ग के जीवन को अपनी कथा का विषय बनाया है। इनके अलावा सर्वश्री भगवतीप्रसाद वाजपेयी, भगवतीचरण वर्मा, अमृतलाल नागर, विष्णु प्रभाकर, द्विजेंद्रनाथ मिश्र 'निर्गुण' आदि लेखकों ने प्रेमचंद के बाद लेखन की दुनिया में अपनी उपस्थिती दर्ज की।

सन् 1938 के अक्तूबर से 'कहानी' नमक पत्रिका का प्रकाशन शुरू हुआ। सन् 1942 के जनान्दोलन और दमन के संकट काल में इस पत्रिका का प्रकाशन बंद हो गया। किंतु हंस पत्रिका का प्रकाशन चलता रहा। इन पत्रिकाओं के माध्यम से सर्वश्री हंसराज रहबर, अमृतराय और रांगेय राघव आदि लेखक प्रकाश में आए। सन् 1954 में 'कहानी' पत्रिका का पुनः प्रकाशन शुरू हुआ।

प्रेमचंदोत्तर कथाकारों में मनोविश्लेषण प्रवृत्ति की प्रधानता है। वर्ग संघर्ष एवं यथार्थ की ओर रुझान भी कुछ कहानीकारों का रहा है तथा उन्होंने प्रतिकात्मकता एवं सांकेतिकता का सहारा भी लिया है। इस काल में प्रेम, रोमांस एवं यौन समस्याओं को भी कहानीकारों ने अपनी विषयवस्तु बनाया है। युगीन परिवेश को पूर्णतः व्यक्त करने में इस काल की कहानी ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। कहानी के शिल्प ने भी इस काल में उत्तरोत्तर प्रगति की है। अब कहानी में घटना विरलता के साथ-साथ व्यक्ति चित्रण पर विशेष बल दिया जाने लगा।

**नई कहानी**

देश की आज़ादी के बाद, नेतृ वर्ग द्वारा दिखाए गए सुनहरे स्वप्न अब धीरे-धीरे बिखरने लगे। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में द्रुत गति से मूल्यहीनता की प्रक्रिया ने युवा पीढ़ी को बरबस हड़बड़ा दिया। जीवन की लक्ष्यशून्यता, निरंतर मूल्यों के विघटन, भ्रष्टाचार, सत्य को अर्धसत्य के रूप में प्रस्तुत करने की दुःसाहसपूर्ण की गई चेष्टाओं सुनियोजित प्रयासों के जनसमूह के मोहभंग की प्रक्रिया में और तेजी ला दी।

वर्ष 1950 के पश्चात हिंदी कहानी के क्षेत्र में एक नए आंदोलन का प्रवर्तन हुआ, जिसे 'नई कहानी' आंदोलन की संज्ञा दी गई। नई कहानी भी 'नई कविता' के समान  इस आंदोलन के उन्नायकों - राजेंद्र यादव, निर्मल वर्मा, कमलेश्वर, मोहन राकेश, प्रभृति ने घोषित किया कि नई कहानी का लक्ष्य नए भाव-बोध या आधुनिकता बोध पर आधारित जीवन के यथार्थ अनुभव का चित्रण करना है। नया कहानीकार न अतीत के आदर्शों से जुड़ा है और न ही भविष्यों के सपनों से। वह वर्तमान में और वर्तमान में भी अपने भोगे हुए यथार्थ को अपनी दृष्टि का केंद्र बनाता है। इसमें जटिल जीवन यथार्थ की व्यापक स्वीकृति दिखाई पड़ती है, साथ ही मध्यवर्गीय चेतना और आधुनिकता बोध भी 'नई कहानी' की प्रमुख प्रवृतियाँ बनी। इसमें छिछली भावुकता के स्थान पर जीवन की अनुभूतियों और समस्याओं से संश्लिष्ट रूप में प्रेम को अभिव्यक्ति मिली। 'नई कहनी' की एक प्रमुख विशेषता 'सांकेतिकता' है। अज्ञेय की कहानी 'साँप', कमलेश्वर की कहानी 'राजा निरबंसिया', राजेंद्र यादव की 'खेल-खिलौना', ठाकुर प्रसाद की 'सर्पदंश', शिवप्रसाद सिंह की 'अंधकूप' कहानियों में प्रतिकात्मक संकेत मिलते हैं। हिंदी की पहली नई कहानी कौनसी है इसपर भी आलोचकों का एकमत नहीं है। नामवर सिंह ने निर्मल वर्मा की कहानी 'परिंदे' को हिंदी की पहली कहानी कहा है, अनेक आलोचकों ने शिवप्रसाद सिंह की कहानी 'दादी माँ' को हिंदी की पहली कहानी माना है।

इस प्रकार नई कहानी में व्यक्तिवाद, यथार्थवाद, अनुभूतिवाद एवं आधुनिकतावाद की प्रतिष्ठा हुई, जिसके फलस्वरूप वह जीवन, समाज और राष्ट्र के व्यापक परिवेश से अलग होकर कहानिकारों के वैयक्तिक जीवन की निजी सीमाओं से आबद्ध हो गई है। इसलिए नई कहानी में व्यक्तिनिष्ठ अहं, काम चेतना, यौनाचर, नारी पुरुष संबंधों का चित्रण प्रमुख रूप से हुआ है।

स्वतंत्रता के बाद हमारी मानसिकता में बदलाव आया है। प्रजातांत्रिक मूल्यों के संबंध में आदर्शवादी कल्पनाएं झूठी साबित हुई हैं तथा जीवन के कठोर यथार्थ से हमारा परिचय और भी घनिष्ठ हुआ है। भूख,, गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा जैसी समस्याओं से हमारे जन-जीवन को पूरी तरह प्रभावित किया है। अतः कहानियों के विषय अब जीवन की वास्तविक समस्याओं से पूरी तरह जुड़े हुए दिखाई पड़ रहे हैं।

नई कहानी की विकास यात्रा बीसवीं शताब्दी के छटे दशक में प्रारंभ हुई। सन् 1955 में 'कहानी' पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ हुआ जिसमें प्रकाशित होने वाली कहानियाँ परंपरागत कहानियों से कुछ अलग दिखाई पड़ रही थी- कथ्य और टेक्नीक दोनों ही दृष्टियों से। बाद में इन कहानियों को 1955-56 के आस-पास 'नई कविता' के वज़न पर 'नई कहानी' कहा जाने लगा।

नई कहानी में दांपत्य जीवन की प्रायः सभी स्थितियों एवं पारिवारिक जीवन की विसंगतियों का चित्रण अनुभूतिपूर्ण शैली में हुआ है। नई कहानी में जीवन के यथार्थ को ईमानदारी के साथ चित्रित किया गया है तथा वह कल्पना प्रसूत होने पर भी अपने आस-पास के जीवन की कहानी दिखती है। उसमें विषय वैविध्य भी है।

- नई कहानी को निम्न वर्गों में बाँट सकते है -

1. **ग्रामीण अंचल की कहानियाँ** - छटे दशक के आरंभ में हिंदी कहानी में ग्रामीण अंचल की कहानियों ने पाठकों को विशेष आकृष्ट किया। इन

कहानिकरों में शिवप्रसाद सिंह, मार्कण्डेय, फणीश्वरनाथ रेणु के नाम प्रमुख हैं। इनकी कहानियों में गाँव की तस्वीर साफ-सुथरे रूप से उभरी है, किन्तु उनमें रोमांस की प्रधानता है।

2. **नगर बोध की कहानियाँ** - नई कहानी में नगर बोध की प्रवृत्ति प्रमुखता से व्यक्त हुई है। आज के नगरीय जीवन में पाई जाने वाली सहानुभूति, आंतरिक ईर्ष्या, स्वार्थपरकता, जीवन की कृतिमता आदि की अभिव्यक्ति कमलेश्वर, निर्मल वर्मा, अमरकांत की कहानियों में देखि जा सकती है।

3. **यथार्थबोध की कहानियाँ** - के कहानीकारों की मानसिकता में 'नई कहानी' एक ओर निकट अतीत में भोगी गयी परतंत्रता की पीड़ा थी, तो दूसरी ओर आजादी के मिलते ही सांप्रदायिक दंगों की पीड़ा। अतः कहानीकार ने यथार्थ को वैयक्तिक स्तर पर अनुभव किया। इस कारण कहानी का यथार्थ विस्तृत होने पर भी उसका चित्रण व्यक्तिगत तथा पारिवारिक संबंधो के धरातल पर ही अधिक किया गया।

**निष्कर्ष :**

नई कहानी में स्वातंत्र्योत्तर समाज में फैली भारत-पाक विभाजन की विभीषिका का, उसमें झुलसते मानवीय संबंधों का चित्रण मिलता है। नई कहानी की विशेषता: "वह जीवन से दूर नहीं है बल्कि जीवन की अत्यंत गहराई में उतर चुकी है"।